सुखमय दुनिया की अग्रदूत दादी प्रकाशमणि

विदुषी, सशक्त नारी, परमात्म प्यारी, नारी शक्ति का अनुपम उदाहरण दादीजी की आभा तथा उसका फैलाव आज पूरा विश्व देख रहा है। आज सम्पूर्ण मानव समाज इस बात को दिल खोल के कहता है कि इस करिश्माई व्यक्तित्व से हमने अपनी मंसा को पूरी तरह से बदला है, और हो भी क्यों नहीं, क्योंकि हमारी दादी थीं ही ऐसी, जिन्होंने आध्यात्मिकता की मशाल जन-जन के हृदय में उन अनुभूतियों से जगाया, जिनसे वे खुद ओत-प्रोत थीं। आज उनकी छाप पाँचों महाद्वीपों में उनके चरित्र के गुणगान के रूप में चित्रित हैं। सबके मध्य दादी जी अपने कर्त्तव्यों के माध्यम से आज भी जीवित हैं। जो कि आज परमात्मा द्वारा विश्व परिवर्तन के कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं, जिन्होंने दादी के साथ रहकर कार्य किया, उनका उनके साथ का अनुभव उन्हीं के शब्दों में...

दादी जी से सभी सदा संतुष्ट रहे

दादी जी के अंग-संग रहने के कारण किसी भी योग्यता में पारंगत होने के लिए मुझे कोई खास मेहनत नहीं करनी पड़ी। जैसे पारस के संग रहकर लोहा भी पारस बन जाता है, ऐसे दादी जी के संग रहकर मैं भी योग्य बन गई। सुबह से सायंकाल तक की व्यस्त दिनचर्या में सैकड़ों बार उनके सम्मुख जाना होता, उनकी प्यार भरी दृष्टि पड़ती और मेरे अंदर उमंग-उत्साह लहरें मारने लगता। उनके सामीप्य में थकान किसे कहते हैं, मैंने नहीं जाना। मुझे महसूस होता रहा कि ये नज़रें दादी जी की नहीं, स्वयं भगवान की हैं, जो मुझे निहाल कर रही हैं। ओम शांति भवन, ज्ञान सरोवर, शांतिवन आदि सभी यज्ञ के बड़े-बड़े भवनों को सजाने-संवारने का पूरा प्रबंधन दादी जी ने मुझे सिखाया। दादी जी खरीददारी की चीज़ें खुद बैठकर लिखवाती थीं। दादी जी की हर आज्ञा को साकार करने में मैं दिल से जुट जाती थी, मुझे बहुत खुशी मिलती थी। दादी जी बहुत ही रहमदिल और ममता की मूरत थीं। दादी जी कभी कोई बात चित्त पर नहीं रखती थीं। मैं छोटी थी, जब कोई गलती कर देती थी तो बहुत प्रेम से समझाती थीं। क्षमा का सागर थीं, हर गलती को भुलाकर प्रेम से आगे बढ़ाती थीं। दादी जी स्वयं सदा संतुष्ट रहती थीं और उनके बोल थे, सभी यज्ञ-वत्स सदा खुश और संतुष्ट रहने चाहिए। किसी को कुछ भी चाहिए तो बाबा के भण्डारे से उसे अवश्य मिलना चाहिए, यह उनकी भावना होती थी। - **ब्र.कु. मुन्नी, कार्यक्रम प्रबंधिका,माउण्ट आबू**

दादी में समानता का भाव सदा रहा

सत्यता व पवित्रता की शक्ति होने के कारण दादी में निर्णय शक्ति बहुत प्रबल थी। निर्भयता से निर्णय लेती थीं, किसी भी बात का उन्हें भय नहीं होता था। वे सभी को समान दृष्टि से देखती थीं, उनमें पक्षपात की भावना नहीं थी। जो सत्य बात होती थी उसे वो कह देती थीं।

जो भी उनके सामने आता था वो उनके निर्मल व निश्छल स्वभाव से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता था। दादीजी हमें भी अपनी सखी की तरह समझती और व्यवहार में आती थीं। मैं दादी बृजेन्द्रा के साथ रहती थी। उनकी तबियत ठीक न होने के कारण मुझे ही सभी कार्य के लिए बाहर जाना पड़ता था। तो कभी किसी निर्णय पर पहुँचने के लिए मैं बृजेन्द्रा दादी से पूछती थी कि दादी क्या करना चाहिए? तो दादी कहती थी कि बड़ी दादी से पूछो। और जब मैं बड़ी दादी को फोन करती थी तो दादी कहती थीं कि संतोष, तुम मेरे को फोन कर रही हो, तुम्हारे पास इतनी बड़ी दादी बैठी है तो उनसे ही पूछो। इस तरह दादियाँ एक-दूसरे को बहुत सम्मान व रिगार्ड देती थीं। दादी छोटों को भी प्यार व रिगार्ड देकर आप समान बना लेती थीं। बड़ों के साथ बड़ा और छोटे बच्चों के साथ दादी भी छोटे बच्चे समान उनसे खेलने लग जाती थीं। -**ब्र.कु. संतोष,अध्यक्षा, समाज सेवा प्रभाग**

उमंग उत्साह से आगे बढ़ाती दादी

जब बाबा ने यज्ञ की स्थापना के समय ओम निवास बनवाया, उसमें 80 बच्चों के लिए लौकिक व अलौकिक पालना की व्यवस्था करवाई। मैं उस समय सात वर्ष की थी। बाबा ने कहा कि इन पवित्र पौधों को सम्भालने के निमित्त केवल पवित्र कन्यायें होंगी। तो पाँच कन्याओं को दादी प्रकाशमणि, दादी चन्द्रमणि, दादी शान्तामणि, मिट्ठू दादी और एक बहन को निमित्त बनाया। बड़ी दादी ने चौदह वर्ष की आयु में ही माँ की तरह, शिक्षिका की तरह बेहद स्नेह से पालना की। सदा बाबा के डायरेक्शन अनुसार ही बड़ी दादी हर कार्य और सेवा इतने दिल से करती थी कि सबको प्रेरणा मिलती थी उनके जैसा बनने की। दादी सदा ही अचानक फोन करती थी, कमलमणि, दादी तुम्हारे पास अभी आ रही है, और बहुत हक से, प्यार से दादी यहाँ आते थे और नई नई प्रेरणाएं और अपनी शुभभावनाएं, दिल की दुआएं देकर जाते थे। दादी सदा ही हँसाते और बहलाते थे। उमंग-उत्साह बढ़ाकर दादी अपने से भी आगे बढ़ने के लिए हमको प्रेरित करतीं। बचपन से ही दादी की पालना, दिल का स्नेह, वरदानी बोल और दृष्टि हम कभी नहीं भूल सकते। - **दादी कमलमणि, दिल्ली**

परमात्म संदेश जन-जन को मिले

हम सभी दिल व जान से दादी जी को याद करते हैं। रात दिन उनकी समीपता की, सहयोग की, सिर पर हाथ की अनुभूति करते हैं, क्योंकि हमारी दादी सम्पूर्ण फरिश्ता बनकर ही गए हैं, जिसे हम कर्मातीत स्थिति भी कहते हैं। आज भी दादी हृदयमोहिनी के तन द्वारा आकर के अपना स्नेह, अपना प्यार समय प्रति समय दे रहे हैं। जो बाबा के बच्चे दादी जी के साथ रात-दिन सेवा में साथ रहे, सहयोगी रहे, उनसे पूरी तरह से अनुभूति किये, वे दादी जी को कभी भी भूल नहीं सकते। मैं हर रोज़ अमृतवेला एवं नुमाशाम पर भी बाबा व मम्मा के साथ दादी जी का फरिश्ता स्वरूप में अनुभव करता हूँ। दादी जी जो संकल्प करती थीं वो कार्य संपन्न हो जाता था। हम सभी ने देखा कि दादीजी ने संकल्प किया कि लाखों की सभा होनी चाहिए और वो सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया। विश्व के परिवर्तन के महान कार्य में दादी जी आज भी हमारे साथ हैं। दादी जी का संकल्प था विज्ञानियों को आगे बढ़ाना, स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करना, उसमें भी दादी जी हम सबके साथ हैं। दादी हम सबके साथ हैं, साथ रहेंगी और साथ ही हम सब वापिस अपने सतयुगी दुनिया में जाएंगे। हर गांव एवं शहर के जन-जन तक परमात्म-संदेश पहुँचे इसलिए दादीजी ने ईश्वरीय प्रेरणा से ओमशान्ति मीडिया पत्रिका का प्रकाशन आरंभ कराया।

- **ब्र.कु. करुणा,अध्यक्ष,मीडिया विंग**

दादी जी का जीवन एक खुली किताब

दादी जी एक ऐसी महान विभूति थीं जिनका जीवन ही एक खुली किताब की तरह था, जिनके जीवन का एक-एक पन्ना पलटने से ही उमंग, उत्साह और साहस का स्वीच ऑन हो जाता है। कथनी और करनी को एक समान बनाकर दादी जी ने जीवन को, हर प्रश्न का उत्तर देने वाली डिक्शनरी बनाया। दादी जी सादगी और स्वच्छता की श्रृंगारी हुई प्रतिमूर्ति थीं। जीवन को त्याग और तपस्या से भरपूर कर ऐसा लाइट, माइट हाऊस बनाया जिससे चारो ओर प्रकाश ही प्रकाश बिखरने लगा। उसी प्रकाश से आज यह विश्व विद्यालय प्रकाशित हो रहा है। ड्रामा अनुसार बाबा ने मुझे सेवा के लिए पटना भेजा। उस समय बाबा सेवा के हिसाब से ''सिन्धी गीता'' लिखना चाहते थे, जिसके लिए बाबा का बुलावा हुआ और दादी जी मधुबन गयीं। मुझे पटना के बहुत से भाई बहनों द्वारा दादी जी के जीवन की अद्भुत शक्ति, गुण और विशेषताओं के बारे में सुनने को मिला। पटना में महासम्मेलन का आयोजन किया गया था, तब दादी जी के और समीप आने का सौभाग्य मिला। दादी से बहुत अपनेपन की महसूसता हुई। दादीजी की एक-एक करनी से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। आज भी उनका व्यक्तित्व हमारे लिए प्रेरणास्रोत है।

-**ब्र.कु. राज,क्षेत्रीय निदेशिका,काठमाण्डू**

दादी के जीवन में समय का महत्व सदा बना रहा

इस यज्ञ के संस्थापक ब्रह्मा-बाबा द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रशासक के रूप में दादी प्रकाश-मणि को ही चुना गया तथा उन्हें ब्रह्माकुमारीज़ का प्रमुख बना दिया गया। दादी जी की प्रशासनिक कला यज्ञ की पहली प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा के समान ही प्रभावशाली था। ब्रह्मा बाबा ने अव्यक्त होने से पहले दादी जी के हाथों में हाथ देकर, दृष्टि देते हुए अपनी सभी सूक्ष्म शक्तियाँ दिव्य रीति से उन्हें सौंप दीं। दादी जी एक कुशल प्रशासिका, महान आध्यात्मिक नेता, प्रेम से सबका देखभाल करने वाली माँ और बहन, एक ऐसी स्ट्रीक्ट टीचर जो ज्ञान की गहराइयों में नियमित, सच्चा योगी, एक बहुत ही प्यारी आध्यात्मिक दोस्त थीं। संगठन के हर सदस्य के गुण व विशेषताओं को ध्यान में रखकर, हरेक के भिन्न-भिन्न विचारों का समन्वय करने पर बल देती थीं। एक-दो के विचारों को सम्मान देने के फलस्वरूप वो संगठन को आपसी एकता के सूत्र में बांध देती थीं। पुरुषोत्तम संगमयुग के अमूल्य समय को व्यर्थ न गंवाकर इसे रचनात्मक कार्यों में लगाने की प्रेरणा दादी जी देती थीं और सदा इस बात का ध्यान रखती थीं कि समय व शक्ति व्यर्थ न जाये क्योंकि इन शक्तियों के द्वारा ही संगठन सुचारू रूप से चलता है। दादीजी सर्व आत्माओं की सूक्ष्म आत्मिक शक्ति के विकास तथा उसके संगठित प्रयोग से असंभव को भी संभव करने पर बल देती थीं। वे समय प्रति समय अखण्ड योग तपस्या (भट्ठी) के विशेष कार्यक्रम आयोजित करवाती थीं। - **राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर, महासचिव,ब्रह्माकुमारीज़**

दादी ने किसी की बात को चित्त पर नहीं रखा

दादीजी का दूसरों की गलतियों को क्षमा करने का स्वभाव दिल को छू जाता था। दादीजी कहती थीं कि बाबा, कौड़ी से हीरा, पतित से पावन व तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने आये हैं। हर आत्मा जो ईश्वरीय ज्ञान-योग का अभ्यास करती है, पुरुषार्थी है, सम्पूर्ण नहीं है। उन्होंने सदा सभी पर रहम किया और दिल से गलतियों को क्षमा कर दूसरों को भी बीती बातों को याद न करने की शिक्षा दी। अपने हृदय को स्वच्छ, निर्मल, शक्तिशाली बनाकर फिर से पुरुषार्थ में लग जाने की प्रेरणा देती थीं। दादीजी का स्लोगन था, क्षमा करो और भूल जाओ। सभी को सम्मान देकर वे स्वयं माननीय बन गईं। उनका व्यक्तित्व दिव्यता व अलौकिकता से सम्पन्न था। - **ब्र.कु. आशा,निदेशिका,ओ.आर.सी.,गुरूग्राम**

संकल्प की दृढ़ता से असंभव भी संभव हो जाता

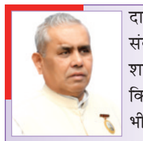

दादी जी के संकल्प में इतनी शक्ति होती थी कि असंभव कार्य भी संभव हो जाता था। एक बार जब दादी बैंगलुरू आईं तो उन्होंने कहा कि विधानसभा के बैंक्वेट हॉल में हमारा एक कार्यक्रम होना चाहिए। वहाँ एक सम्मेलन का प्रबंध करो। उन दिनों वह हॉल किसी भी गैर सरकारी संस्था को नहीं दिया जाता था तो हमने दादी जी से कहा कि वे प्राइवेट संस्थाओं को वह हॉल नहीं देते। दादी जी ने कहा कि आप हिम्मत करो, प्रयत्न करो, बाबा बैठा है। मुख्यमंत्री से मिलो, संबंधित अधिकारियों, सचिवों से मिलो, काम हो जायेगा। बच्चों का एक कदम और बाबा के हज़ार कदम। ऐसे कहकर हम सब भाई-बहनों में उन्होंने उमंग भरा और हम सबने मिलकर ऐसा ही किया। मुख्यमंत्री और संबंधित अधिकारियों से मिलकर वह हॉल ले लिया और बहुत बड़े रूप में प्रोग्राम वहाँ किया। कार्यक्रम बहुत सफल रहा। उन दिनों ईश्वरीय इतिहास में यह एक विशेष प्रसंग था, यादगार घटना थी। उस सम्मेलन में केन्द्र सरकार और राज्य सरकार के अनेक मंत्री तथा लोगों ने भाग लिया था। इस सम्मेलन की सफलता का श्रेय आदरणीय दादी जी को जाता है।

- **ब्र.कु. मृत्युंजय,उपाध्यक्ष,शिक्षा प्रभाग**

दादी से सभी को अपनेपन की होती महसूसता

ओम निवास में जो भी छोटी-छोटी कुमारियाँ थीं, उनकी संभाल करने की ज़िम्मेदारी बाबा ने दादी जी को ही दी थी। बाबा अपनी ज़िम्मेवारियाँ दादी जी को दिया करता था, साथ-साथ उनको सिखाता जाता था। कारोबार कैसे चलाना है, किस प्रकार बातचीत करना है, किस प्रकार सम्भालना है, वो सब कला दादी में बाबा से आ गईं। बाबा समान ही दादी के अंदर फीलिंग थी कि यह मेरा ही परिवार है, ये मेरे ही बच्चे हैं। बाबा का परिवार अर्थात् मेरा परिवार। दादी जी में सबके प्रति अपनापन होने के कारण सभी को भी दादी के प्रति अपनापन आता था, सब समझते थे कि दादी हमारी है। कोई भी सेवा हो, निमंत्रण आये, बाबा दादी को ही भेजते थे। पहले-पहले जापान से जब निमंत्रण आया, उसमें दादीजी का पहला पार्ट रहा। बाबा समान सबकी पालना, सबके ऊपर ध्यान देना तथा मधुबन वालों के लिए ठीक प्रबंध करना, यह सब दादी खुद करती थीं। रात्रि में पार्टी वाले विश्राम करते थे तब बाबा दादी जी को और हमको भेजते थे कि जाओ बच्चे, जाकर देखो, सब ठीक-ठाक आराम से सोये हैं, उनके लिए सब सुविधाएँ हैं ना। जैसे बाबा की दिल बड़ी थी, वैसे ही दादी जी की भी सबके प्रति बड़ी दिल थी। किसी को कुछ चाहिए होता तो वो मांगना नहीं पड़ता था। जैसे बाबा कहा करते थे कि अगर आये हुए बच्चों को हम ठीक प्रबंध नहीं देंगे तो उनको यहाँ आकर अपना लौकिक घर याद आएगा। इसलिए दादी ने बच्चों को ऐसा प्रबंध दिया कि उनको लौकिक घर, माँ-बाप, मित्र-संबंधी आदि याद नहीं आये।

दादी को देखने का, उनके साथ रहने का, उनके साथ सेवा में सहयोगी बनने का पार्ट हमारा भी रहा। बाबा के साथ मम्मा भी रहती थीं, लेकिन बाबा के साथ सेवा में बाहर जाना ज़्यादा दादी जी का ही होता था। - **राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी,संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़**

प्रशासन में मानवीय सद्भावना का सदा रखा ख्याल

दादीजी दैवी परिवार के एक-एक सदस्य को बहुत ही महत्वपूर्ण और खास समझती थीं। दादी की नज़रों में सभी एक समान महत्व रखते थे, इसलिए उन्होंने कभी किसी को अलग से कोई खास टोली या गिफ्ट नहीं दिया। उन्होंने कभी किसी के अवगुण नहीं देखे, बल्कि सभी की विशेषताओं की सराहना की। जब भी मधुबन में कोई ग्रुप आता था तो दादीजी सभी के रहने की व्यवस्था तथा उनकी संतुष्टता का पूरा ध्यान रखती थीं। उन्होंने दैवी परिवार का मुखिया होने का रोल बखूबी निभाया। इतने विशाल आध्यात्मिक संस्था की मुख्य प्रशासिका के रूप में अपने अधिकारों का मानवीय सद्भावना के साथ इस्तेमाल करती थीं। वह हमेशा याद कराती थीं कि यह कार्य बाबा का है और वो करा रहा है। उन्होंने बाबा पर दृढ़ निश्चय एवं समर्पण होकर सभी परिस्थितियों को पार किया। दादी ने शांतिदूत के रूप में कई देशों की यात्राएं की और वहाँ के प्रशासकों से मिलकर उन्हें शांति संदेश दिया। दादी से मिलकर सभी को पवित्र प्रेम की भासना आती थी। - **राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन,अध्यक्ष राजनैतिक सेवा प्रभाग**

दादी की निर्णय शक्ति प्रबल थी

दादी जी हर पहलू को सकारात्मक दृष्टि से देखतीं और नये विचारों को खुलकर अपनाती थीं। किसी भी नये विचार को बड़े स्तर पर अपनाने से पहले छोटे स्तर पर उसको जांचती थी कि ये कार्य उचित परिणाम देगा या नहीं। इस प्रकार सभी ब्रह्माकुमार-कुमारियों को प्रेरणा मिलती थी। वे केवल एक अच्छी प्रशासिका ही नहीं थीं, बल्कि उनके भाषणों में चमत्कारिक शक्ति थी। देश-विदेश में उनके भ्रमण ने सभी को ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाओं को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी तथा वी.आई.पीज़ को संस्था से जुड़ने में बहुत सहायता की। दादी जी को न केवल ब्राह्मण परिवार, बल्कि विश्व की सर्व आत्माओं से बहुत प्यार था। वे सहज भाव से पाण्डव भवन के बरामदे में बैठ जाती थीं और सभी के छोटे-से-छोटे सवालों का भी जवाब देती थीं। अनेकों ने अपने जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए दादी जी के निर्देशन का लाभ उठाया। दादी जी में लव एवं लॉ का सुंदर बैलेन्स था। दादीजी ने इस ईश्वरीय यज्ञ की सेवाओं को परमात्म-शक्ति की मदद से सारे विश्व में फैलाया। दादीजी में निर्णय शक्ति बहुत प्रखर थी, वे महत्वपूर्ण निर्णय लेने में देर नहीं करती थीं, तुरंत उसे मूर्त रूप देती थीं। । - **ब्र.कु. डॉ. निर्मला, निदेशिका,ज्ञानसरोवर**